आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 19-02-2016 ● अंक-439 ● तारीख - 20 फरवरी 2016, माघ शुक्ल पक्ष - 13 ● शनिवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

भगवान गणेश को मोदक का भोग लगाएं जीवन में खुशहाली लाएं

भगवान गणेश की मूर्तियों एवं चित्रों में उनके साथ उनका वाहन और उनका प्रिय भोजन मोदक जरूर होता है। शास्त्रों के मुताबिक भगवान गणेश को प्रसन्न करने के लिए सबसे आसान तरीका है मोदक का भोग। गणेश जी का मोदक प्रिय होना भी उनकी बुद्धिमानी का परिचय है।

भगवान गणेश को मोदक इसलिए भी पसंद है क्योंकि मोदक प्रसन्नता प्रदान करने वाला मिष्टान है। मोदक के शब्दों पर गौर करें तो मोदृ का अर्थ होता है हर्ष यानी खुशी। भगवान गणेश को शास्त्रों में मंगलकारी एवं सदैव प्रसन्न रहने वाला देवता कहा गया है। अर्थात् वह कभी किसी चिंता में नहीं पड़ते।

गणपत्यथर्वशीर्ष में लिखा है, ''यो मोदकसहस्त्रेण यजति स वांछितफलमवाप्नोति।'' इसका अर्थ है जो व्यक्ति गणेश जी को मोदक अर्पित करके प्रसन्न करता है उसे गणपति मनोवांछित फल प्रदान करते हैं।

हिन्दू धर्म परंपराओं में बुधवार का दिन सभी सुखों का मूल बुद्धि के दाता और देवता भगवान श्री गणेश की उपासना का दिन है। इसी कड़ी में श्री गणेश को विशेष रूप से मोदक या लड्डू चढ़ाने की भी परंपरा है। शास्त्रों में यह वर्णित है कि भगवान गणेश को बुधवार के दिन 5 या फिर 11 लड्डुओं का भोग लगाने से वह जीवन की समस्त बाधाओं को हर लेते हैं। इन लड्डुओं का भोग लगाने के साथ ही श्रद्धापूर्वक ऊं गं (गम) गणपतये नमः मंत्र का जितनी बार संभव हो सके जाप करें।

बुधवार के स्वामी बुध ग्रह भी हैं, जो बुद्धि के कारक भी माने जाते हैं। इस तरह बुद्धि प्रधानता वाले दिन पर बुद्धि के दाता श्री गणेश की मोदक का भोग लगाकर पूजा प्रखर बुद्धि व संकल्प के साथ सुख–सफलता व शांति की राह पर आगे बढने की प्रेरणा व ऊर्जा से भर देती है।

किसानों के लिए अच्छी खबर, सरकार ने घटाई फसल बीमा प्रीमियम दर

केंद्र सरकार ने फसल बीमा प्रीमियम की दर घटा दी है। अब नई प्रीमियम दर खरीफ की फसल के लिए डेढ़ फीसदी और रबी की फसल के लिए दो फीसदी ली जाएगी। इसके बाद अगर फसल को कोई प्राकृतिक आपदा मार देती है तो किसान को मुआवजा दिया जाएगा।

बीमा कंपनी देगी मुआवजा–

अब तक फसल का बीमा करने के लिए 10 फीसदी प्रीमियम जमा करना होता था। पिछले साल बेमौसम बारिश ने गेहूं की फसल पूरी तरह बर्बाद कर दी थी। इस नुकसान की भरपाई के लिए सरकार ने किसानों को मुआवजा दिया था। किसान सरकार के मुआवजे के भरोसे न रहे, इसे लेकर केंद्र सरकार ने फसल बीमा में प्रीमियम दर 10 फीसदी से घटा कर रबी के दो फीसदी और खरीफ के लिए डेढ़ फीसदी कर दिया है। यह बीमा सहकारी भूमि विकास बैंक या फिर कृषि प्राथमिक सहकारी बैंकों के माध्यम से ही किया जाएगा। जब भी कोई प्राकृतिक आपदा आएगी और फसल को नुकसान होगा तो उस पर मुआवजा बीमा कंपनी देगी।

व्यक्ति की अचूक पहचान होती है–आँखों में रक्तनलियों का जाल

रक्त नलिकाओं का इसी प्रकार का अनोखा जाल आँखों में भी पाया जाता है। आँख के जिस परदे पर चित्र उभरता है उसे रेटिना कहते हैं। रेटिना में रक्त पहुँचाने वाली नलिकाओं का जाल भी आजीवन स्थाई रहता है और उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। इस जाल की बनावट हर व्यक्ति में अनोखी होती है। मोतियाबिन्द का ऑपरेशन होने पर भी इस जाल में कोई परिवर्तन नहीं होता। यदि मध्यम तेज रोशनी को विशेष प्रकार से आँख पर घुमाया जाए तो इस जाल की बनावट की फोटो ली जा सकती है। आजकल इस जाल को कम्प्यूटर द्वारा पढ़ना सम्भव हो जाने से इसका अधिक उपयोग होने लगा है।

आँख के तारे के इर्द–गिर्द पाए जाने वाले गहरे रंग के घेरे (पुतली) पर बनी सिलवटें, रंगीन वृत्त और इन वृत्तों में पाए जाने वाले काले धब्बों की बनावट भी हर व्यक्ति में अनोखी होती है। इनका वाचन भी आँख पर हल्की रोशनी डाल कर किया जा सकता है। यह माना जा रहा है कि रेटिना की रक्त नलिकाओं की बनावट की तुलना में यह प्रणाली अधिक अचूक है। अनेक देशों ने इसका उपयोग पासपोर्ट–वीसा में शुरू किया है।

इस विधि में मशीन द्वारा खींची गई पुतली की फोटो की तुलना पासपोर्ट पर लगी व्यक्ति की आंखों की फोटो से की जाती है। इस तरह के जैवमितीय पासपोर्ट देना कुछ देशों ने शुरू कर दिया है। यह कोशिश की जा रही है कि आगामी कुछ वर्षों में सभी देश इस प्रणाली पर आधारित पासपोर्ट जारी करें।

जैवमितीय प्रणाली के उपयोग को बढ़ावा मिलने के कई कारण हैं। पहला, किसी व्यक्ति की अचूक पहचान करने के लिए इससे अच्छा कोई निशान नहीं है। दूसरे, इसका वाचन स्वचालित कम्प्यूटर–आधारित मशीन से होने के कारण यह पूरी तरह वस्तुनिष्ठ है। इस पर किसी पूर्वाग्रह का असर नहीं होता। तीसरा, सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है कि इस पहचान के निशान की चोरी नहीं हो सकती, यह हमेशा व्यक्ति के साथ रहता है और इसमें कोई बदलाव नहीं किया जा सकता।

जैवमितीय यंत्र से रेटिना या पुतली की बनावट की नाप–जोख की जाती है। यह सारी जानकारी कम्प्यूटर को दी जाती है और उस बनावट का डिजिटल चित्र बनाया जाता है। इस चित्र को बारकोड में बदला जाता है, ठीक वैसा ही बारकोड जैसा किसी चीज की कीमत दर्शाने के लिए उसके आवरण पर छपा होता है। इस बारकोड को पासपोर्ट या अन्य किसी पहचान पत्र पर भी छापा जा सकता है।

आजकल किन्हीं खास हालात में पहचान के लिए डीएनए की बनावट का उपयोग भी किया जाता है। इन निशानों का चित्र भी बारकोड के समान ही दिखाई देता है। यह भी एक जैवमितीय प्रणाली ही है। किन्तु इन निशानों को पढ़ने के लिए उस व्यक्ति के विशेष सहयोग की आवश्यकता होती है। उसके मुँह के भीतर की त्वचा पर रूई का फाहा घुमाकर या खून का नमूना लेकर उसमें से डीएनए के रेशे अलग किए जाते हैं। किन्तु अन्य जैवमितीय निशानों की जाँच के लिए इतने ताम–झाम की जरूरत नहीं होती। उस व्यक्ति के शरीर को हाथ लगाए बिना यह जाँच की जा सकती है। इसीलिए, अचूक पहचान का निशान बाँई आँख बन गई है।

अनमोल वचन (सत्यसांई बाबा)

सारे बोझ को अपने सर से उतार कर भगवान को सौंप दो।

अनमोल वचन

1.मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कद्र नहीं करता, वह हमेश उस चीज की आस लगाये रहता है जो उसके पास नहीं है। –हेलेन कलर की किताब ''स्टोरी आफ लाइफ''

2.जिस व्यक्ति में सफलता के लिए आशा और आत्मविश्वास है, वही व्यक्ति उच्च शिखर पर पहुंचते हैं।

3.आत्मविश्वास सफलता का प्रमुख रहस्य है। –इमर्सन

4.आत्मविश्वासी कभी हारता नहीं, कभी थकता नहीं, कभी गिरता नहीं और कभी मरता नहीं।

5.जब तक आत्मविश्वास रूपी सेनापति आगे नहीं बढ़ता तब तक सब शक्तियाँ चुपचाप खड़ी उसका मुँह ताकती रहती हैं।

6.दृढ़ आत्मविश्वास ही सफलता की एकमात्र कुंजी है। –

7.धर्म परमेश्वर की कल्पना कर मनुष्य को दुर्बल बना देता है, उसमे आत्मविश्वास उत्पन्न नहीं होने देता और उसकी स्वतंत्रता का अपरहण करता है। –नरेन्द्र देव

मानव मन के बोल

अटूट बन्धन रिश्तों के

गतांक से आगे.....

इसलिये आप कृपा करके मेरा गया तीर्थ में श्राद्ध करवा दो, पिण्ड दान करवा दो। नाम पता किया, वास्तव मैं मिला। उसकी पत्नी ने कहा, साल भर पहले मेरे पति की मृत्यु हो गई, कोई एक्सीडेन्ट हो गया था। फिर पोद्दार जी ने किसी ब्राह्मण जी को भेजकर गया में उनका पिण्ड दान करवाया और फिर जब पुनः पानी छोड़ा तो बहुत–बहुत धन्यवाद की आवाज आई।

पोद्दार जी, हनुमान प्रसाद जी आपको बहुत–बहुत धन्यवाद, आपने मेरी मुक्ति करवा दी। अब मेरी व्याकुलता मिट गई। देखो बाबू, भैय्या ये व्याकुलता मिटनी चाहिये। हाँ.... टेंशन क्या करना है? जिन्दगी भर करते रहेंगे क्या? क्यों? करे, किसके लिये करें भाई? ठाकुर जी की तो बड़ी कृपा हो गई । महाराज, ठाकुर जी की तो इतनी कृपा होगी, इतनी होगी जिसकी कोई तुलना नहीं है।

बड़े भाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सब ग्रन्थ न गावा। मुद् मंगलमय संत समाजु जिमी जग मति तीरथ राजु।

महारानी अहिल्या बाई जी ने एक आचार्य जी को बुलाया और कहा–आचार्य जी मैं गीता सुनना चाहती हूँ। और आचार्य जी ने बहुत प्रेम पूर्वक जैसे ही गीता जी का प्रथम श्लोक जैसे मेरी पूज्य माताजी बाई, सोहनी देवी जी आदरणीया, गीताजी का 18 वां अध्याय का पाढ करती जाती थी, और फुलके बेलती जाती थी। हे मां, ये आपकी कृपा से नारायण सेवा! मां बाई आपकी वजह से, बापू जी आपकी वजह से नारायण सेवा संस्थान हमारा कोई प्रयत्न नहीं है। गलतीयाँ जितनी भी हुई–मेरी है। जितने अपराध हुए–मेरे हैं। हे मेरे बापू जी! हे मेरी बाई, हे मेरी दुर्गा माता जी, भीण्डेश्वर महादेवजी, हे स्वरूप नाथ जी भगवान, नृसींह भगवान, कालीका माता जी, बाला जी महाराज, मेरे अपराधों को क्षमा करो।

प्रभु शरणम्, प्रभु शरणम्, प्रभु शरणम्।

मैं आपकी शरणों में, मेरी 48 साल की उम्र ही आपने प्रारम्भ में दी थी, मेरे पर कृपा करके आपने और साल दे दिये। आज 68 वर्ष के, 68 वर्ष भी पूरे हो गये। 69 वें वर्ष में आपने मुझे प्रवेश करा दिया।.....

क्रमश अगले अंक में ...

सृष्टि के वास्तुकार श्री विश्वकर्मा (प्राकट्य दिवस पर विशेष)

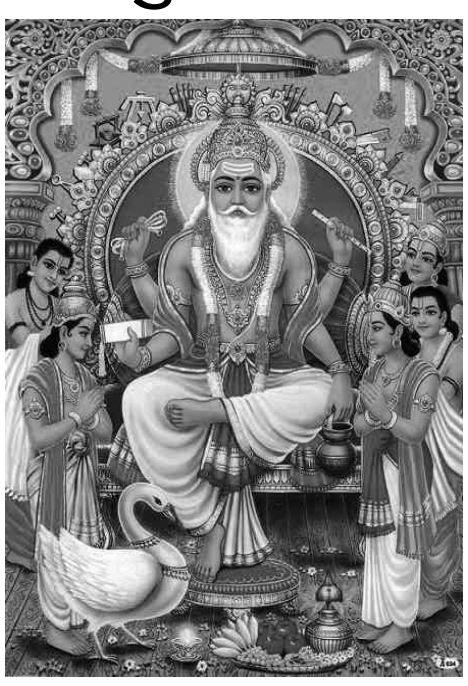

प्राचीन काल में जितनी राजधानियां थी, प्रायः सभी विश्वकर्मा की ही बनाई कही जाती हैं। यहा तक कि सतयुग का 'स्वर्ग लोक', त्रेता युग की 'लंका', द्वापर की 'द्वारिका' और कलयुग का 'हस्तिनापुर' आदि विश्वकर्मा द्वारा ही रचित हैं। 'सुदामापुरी' की तत्क्षण रचना के बारे में भी यह कहा जाता है कि उसके निर्माता विश्वकर्मा ही थे। पुराणों में इसका व्यापक विवरण मिलता है। स्पष्ट है कि जब इतने बड़े–बड़े नगर और राज्यों की राजधानियां विश्वकर्मा जी ने बनाईं और अपनी उत्कृष्ट निर्माण कला का प्रदर्शन किया तो वह हमारे सबसे महत्त्वपूर्ण देवता हैं। उड़ीसा में स्थित भगवान जगन्नाथ मंदिर की निर्माण कथा तो विश्वकर्मा जी का ही गुणगान करती है।

भगवान विश्वकर्मा के अनेक रूप बताए जाते हैं– दो बाहु, चार बाहु एवं दश बाहु तथा एक मुख, चार मुख एवं पंचमुख। उनके मनुमय, त्वष्टा, शिल्पी एवं दैवज्ञ नामक पांच पुत्र हैं। यह भी मान्यता है कि ये पांचों वास्तु शिल्प की अलग–अलग विधाओं में पारंगत थे और उन्होंने कई वस्तुओं का आविष्कार किया। इस प्रसंग में मनु को लोहे से, तो मय को लकड़ी, त्वष्टा को कांसे एवं तांबे, शिल्पी ईंट और दैवज्ञ सोने–चांदी से जोड़ा जाता है।

भगवान विश्वकर्मा की महत्ता करने वाली एक कथा है। इसके अनुसार वाराणसी में धार्मिक व्यवहार से चलने वाला एक रथकार अपनी पत्नी के साथ रहता था। अपने कार्य में निपुण था, परंतु स्थान–स्थान पर घूम–घूम कर प्रयत्न करने पर भी भोजन से अधिक धन नहीं प्राप्त कर पाता था। पति की तरह पत्नी भी पुत्र न होने के कारण चिंतित रहती थी। पुत्र प्राप्ति के लिए वे साधु–संतों के यहां जाते थे, लेकिन यह इच्छा उसकी पूरी न हो सकी। तब एक पड़ोसी ब्राह्मण ने रथकार की पत्नी से कहा कि तुम भगवान विश्वकर्मा की शरण में जाओ, तुम्हारी इच्छा पूरी होगी और अमावस्या तिथि को व्रत कर भगवान विश्वकर्मा महात्म्य को सुनो। इसके बाद रथकार एवं उसकी पत्नी ने अमावस्या को भगवान विश्वकर्मा की पूजा की, जिससे उसे धन–धान्य और पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई और वे सुखी जीवन व्यतीत करने लगे। उत्तर भारत में इस पूजा का काफी महत्व है।

विश्वकर्मा जी ब्रह्मा जी के परिवार के सदस्य हैं। ब्रह्मा जी के पुत्र धर्म तथा धर्म के पुत्र वास्तुदेव थे। धर्म की वस्तु नामक स्त्री, जो दक्ष की कन्याओं में से एक थी, से वास्तु के रूप में, सातवें पुत्र के रूप में उन्होंने जन्म लिया। इन्हें शिल्पशास्त्र का आदि पुरुष माना जाता है। इन्हीं वास्तुदेव की अंगिरसी नामक पत्नी से विश्वकर्मा जी का जन्म हुआ। अपने पिता के पदचिह्नों पर चलते हुए विश्वकर्मा भी वास्तुकला के महान आचार्य बने।

अपने भक्तों की पूजा से विश्वकर्मा जी जब संतुष्ट होते हैं तो उनकी मनोकामना शीघ्र ही पूर्ण करते हैं।

साथी (लघुकथा)

बबलू चौथी कक्षा में पढ़ता था। उसकी कक्षा में तीस छात्र थे। अपने जन्मदिन पर उनके लिए घर से उतने ही चॉकलेट के पैकिट स्कूल ले गया। सबको एक एक बांटने के बाद उसके पास एक बच गया क्योंकि उसका भागीदार अनुपस्थित था। बचे हुए पैकेट को जेब में रखते ही उसे गोलू का ध्यान आ गया। वह हर शाम अपनी माँ के साथ उसके घर आया करता। गोलू की माँ तो घर के काम में लग जाती और गोलू बबलू के साथ खेला करता।

यह पैकिट तो मैं गोलू को दूंगा । स्कूल का न सही वह घर का साथी तो है। पर माँ इस बात को नहीं समझती। उसे हमारा साथ–साथ खेलना भी अच्छा नहीं लगता। मैं क्या करूँ? अरे, याद आया सुबह उठते ही माँ ने कहा था–बेटा, आज तुम्हारा दिन है, जो चाहो करो। लो बन गई बात! अब तो मैं उसे दे ही दूंगा।

चॉकलेट पाकर गोलू के चेहरे पर हजार खुशियाँ नाच उठीं। बबलू उसका हाथ पकड़ स्कूल की ताजी खबरें सुनाने बाहर की ओर चल दिया।

सम्पादकीय

जिस प्रकार जीवन के सम्यक् निर्वाह के लिए जीवन को एक सुनिश्चित दिशा की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार जीवन की उपलब्धियों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति अपनी वासनाओं और इच्छाओं पर नियंत्रण करे और मिल बाँटकर खाने में प्रसन्नता का अनुभव करे, परन्तु हम ऐसा नहीं करते हैं। यही कारण है कि हम न तो अपनी उपलब्धियों द्वारा सम्यक् रूपेण लाभान्वित हो पाते हैं और न उनको स्थायित्व प्रदान कर पाते हैं। इस प्रवृत्ति से उत्पन्न जीवन की आपा–धापी गलाकाट प्रतियोगिता एवं सर्वभक्षी जीवन पद्धति ने हमको अर्थ पिशाच एवं कामांध नर–पशु की कोटियों में खड़ा कर दिया है तथा मानवीय मूल्यों के प्रति हमारा किसी प्रकार लगाव नहीं रह गया है। किसी श्रेष्ठ जन ने उचित परामर्श दिया है कि हम यदि साधन का ध्यान रखकर ठीक प्रकार काम करेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी। कहने की आवश्यकता नहीं है कि अनेक प्रतियोगी केवल इस कारण सफलता का वरण नहीं कर पाते हैं क्योंकि वे अपने लक्ष्य को निर्धारित करते समय उपलब्ध साधनों पर विचार नहीं करते हैं। हमें अपनी सामर्थ के अनुसार साधन जुटाने पर विचार करना चाहिए और उनके परिप्रेक्ष्य में अपने प्रातव्य निर्धारित करने पर विचार करना चाहिए। हमारा लक्ष्य सह अस्तित्व मात्र न होकर सह जीवन होना चाहिए। हमारे विचार से सह अस्तित्व पर केन्द्रित विचारधारा ने हमें अन्य प्राणियों के योग–क्षेत्र के प्रति उदासीन ही नहीं, बल्कि पूर्णतः स्वार्थबद्ध भी बना दिया है। ''मेरा पेट हाऊ और मैं न देउँ काउ'' कथन पर आधारित व्यक्ति अधिकतम भोजन करना चाहता है, जिससे वह इस सन्तोष की अनुभूति कर सके कि उसने अन्य व्यक्ति के हिस्से के भोजन का भी उपभोग कर लिया है। प्रचलित प्रवाद के अनुसार गधे को वैशाखनन्दन कहते हैं क्योंकि चारों ओर सूखी भूमि देखकर वह इस संतोष की अनुभूति करता है कि उसने सब घास उदरस्थ कर ली है। वृहद स्तर पर यह प्रवृत्ति आर्थिक शोषण के रूप में दिखाई देती है। यह प्रवृत्ति भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती आदि समाज विरोधी दृष्कृत्यों को जन्म देती है। जो व्यक्ति सब कुछ हड़प लेने को प्रत्यत्नशील बने रहते हैं, वे सदैव आशंका, भय एवं दुराव–छिपाव का जीवन व्यतीत करने को विवश होते हैं क्योंकि उनकी उपलब्धियाँ श्रम की सुदृढ़ शिला पर स्थापित नहीं होती है।

अतः जिस समाज से हम कुछ प्राप्त करते हैं, उसका ऋण चुकाने का प्रयत्न हमें अवश्य करना चाहिये। ऐसी सोच रखने वाला व्यक्ति जीवन में निरन्तर आगे की ओर बढ़ता जाता है– पूर्व स्थिति को प्राप्त होकर दुःख एवं अपमान भोगने की आशंका उसको नहीं सताती है।

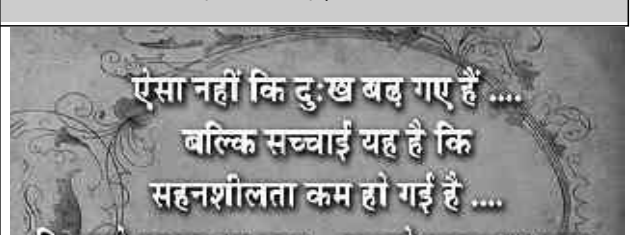

''भगवान के श्रृंगार दर्शन की भावना''

माता यशोदा अपने बाल गोपाल का समयानुकूल ललित श्रृंगार करती है। उबटन लगाकर स्नान कराती है। श्यामसुन्दर को पीताम्बर धारण कराती है। ब्रजसुन्दरी गण और भक्त उनका परम रसमय दर्शन करके अपने आपको धन्य मानते हैं। प्रभु यशोदा माँ की गोद में विराजमान है, करमें वेणु और मस्तक पर मयूर पंख की छवि मनोहारिणी है। कही लाला के नजर न लग जाय की भावना से काजल टीकला लगाती है।

श्रृंगार नित्य में सामान्य होते हैं किन्तु उत्सव महोत्सव मनोरथादि पर भारी एवं विभिन्न आभूषणों को धराया जाता है।

श्रृंगार चार प्रकार की भावना के कहे जाते हैः– (1) कटि पर्यन्त (2) मध्य के (3) छेड़ा के (4) चरणारविन्दनार्थ

जिनमें आभूषण ऋतुनुसार धराये जाते हैं।

उष्णकाल में मोती –फाल्गुन में सुवर्ण तथा दूसरी ऋतु में रत्न जटित।

कमल सुख देखत कोन अधाय।
सुनरी सखी लोचन अति मेरे, मुदित रहे अरूझाय।।
युक्ता माल लाल उर उपर, जनु फूली बन राय।
गोवर्धन घर अंग–अंग पर कृष्णदास बलि जाय।।

महाराष्ट्र के शेख महमूद को लगाया कृत्रिम पांव

उदयपुर। करीब 26 साल पहले एक सड़क हादसे में घुटने तक दायां पांव खो देने वाले महाराष्ट्र के शेख महमूद को ''नारायण सेवा संस्थान'' में निःशुल्क कृत्रिम पांव लगाया गया।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि नांदेड़ जिले के तरोड़ा गांव में रहने वाले शेख महमूद कृत्रिम पांव लगने के बाद काफी सहज महसूस कर रहे हैं और वे अपने दैनिक कार्य आसानी से कर सकेंगें।

इनकी पारिवारिक आर्थिक स्थिति को देखते हुए निदेशक श्रीमती वंदना अग्रवाल ने इनकी पत्नी बेगम असगरी बाई को सिलाई मशीन भी निःशुल्क प्रदान की ।

मूर्धन्य कवि– मैथिलीशरण गुप्त

पद्म भूषण मैथिलीशरण गुप्त की "नर हो न निराश करो मन को" का हर शब्द मन में आशा का संचार करता है। हिन्दी की खड़ी बोली कविता के मूर्धन्य कवियों में उनका नाम प्रमुख है। उनका जन्म 3 अगस्त, सन 1885 ईस्वी को झांसी (उत्तर प्रदेश) के चिरगाँव में श्रीमती काशीबाई और सेठ रामचरण गुप्त के घर में हुआ था। खड़ी–बोली को काव्य–भाषा का रूप देने के प्रयास उन्होने आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से किए और अपनी ओजस्वी काव्य–रचनाओं द्वारा अन्य कवियों को भी प्रेरित किया। उनकी रचनाएँ सरस्वती और भारत–भारती में छपीं। उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में पंचवटी, जयद्रथ वध, यशोधरा, और साकेत प्रमुख हैं। उन्होने संस्कृत नाटक स्वप्नवासवदत्ता का हिन्दी अनुवाद भी किया। तिलोत्तमा, चंद्रहास, विजयपर्व उनके प्रमुख नाटक हैं।

गुप्त जी का विवाह सन 1895 में 10 वर्ष की अल्पायु में हो गया था। तब बाल–विवाह प्रचलित थे जिनमें विवाह संस्कार बाल्यावस्था में हो जाता था और युवावस्था में गौना करने की परंपरा थी। परतंत्रता के दिनों में उनकी ओजस्वी लेखनी अनेक भारतीयों की प्रेरणा बनी। स्वतंत्रता संग्राम के समय वे कई बार जेल भी गए।

भारत को स्वतन्त्रता मिलने पर उन्हें पद्म भूषण के अतिरिक्त उन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक भी मिला। स्वतंत्र भारत सरकार ने उन्हें "राष्ट्रकवि" का सम्मान दिया था। 1947 में वे संसद सदस्य बने और 12 दिसंबर 1964 को अपने देहावसान तक सांसद रहे।

मैथिली शरण गुप्त की प्रमुख रचनाएं–पवित्रता, नैतिकता और परंपरागत मानवीय संबंधों की रक्षा गुप्त जी के काव्य के प्रथम गुण हैं, जो पंचवटी से लेकर 'जयद्रथ वध', 'यशोधरा' और 'साकेत' तक में प्रतिष्ठित एवं प्रतिफलित हुए हैं। 'साकेत' उनकी रचना का सर्वोच्च शिखर है। लेकिन 'भारत–भारती' मैथिलीशरण की सबसे प्रसिद्ध रचना मानी जाती है। इस रचना में उन्होंने स्वदेश प्रेम को दर्शाते हुए वर्तमान और भावी दुर्दशा से उबरने के लिए समाधान खोजने का एक सफल प्रयोग किया है। भारतवर्ष के संक्षिप्त दर्शन की काव्यात्मक प्रस्तुति 'भारत–भारती' निश्चित रूप से किसी शोध कार्य से कम नहीं है। साकेत, जयभारत, यशोधरा, गुरुकुल ,काबा–कर्बला आदि उनकी प्रमुख रचनाएं हैं।

कला और साहित्य के क्षेत्र में विशेष सहयोग देने वाले मैथिली शरण गुप्त को 1952 में राज्यसभा सदस्यता दी गई और 1954 में उन्हें पद्मभूषण से नवाजा गया। इसके अतिरिक्त उन्हें हिन्दुस्तानी अकादमी पुरस्कार, साकेत पर इन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक तथा साहित्य वाचस्पति की उपाधि से भी अलंकृत किया गया। काशी विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.लिट्. की उपाधि प्रदान की। 12 दिसंबर, 1954 को चिरगांव में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का देहावसन हो गया। आज तीन अगस्त को उनकी जयंती लोग कवि दिवस के रुप में मनाते हैं। मैथिलीशरण गुप्त की रचनाएं आज भी इस बात का आभास दिलाती हैं कि भारतीय संस्कृति में साहित्य का कितना अहम योगदान है।

स्वस्थ रहने के लिए दैनिक स्नान जरूरी

आपने अपने और अन्य सभी को मूलतः यह कहते हुए सुना होगा कि रोज स्नान किया करो ।

हिन्दू सनातन धर्म में प्रतिदिन प्रातःकाल में स्नान करके, पवित्र होकर, संध्या, पूजा–पाठ करने का निर्देश है। अतः कुतर्कियों का आरोप है कि दैनिक स्नान क्यों करें?

हमारे यहां प्रत्येक शुभकर्म में पवित्रता स्थापित करने हेतु स्नान करने का विशेष महत्त्व है। पर वैज्ञानिक दृष्टि से स्नान का तात्पर्य शारीरिक शुद्धि से है। हमारे शरीर में असंख्य रोमकूप हैं। दिन पर परिश्रम करने पर शरीर से पसीना निकलता है। वायु लगने से पसीने का द्रवभाग तो वाष्प बनकर उड़ जाता है, परन्तु अद्रव मैल इन रोम कूपों में जम जाता है। यदि इस मल को नित्य साफ न किया जाए तो कुछ दिनों बाद मैल की मोटी तह एकत्र होकर इन रन्ध्रों को बिलकुल बंद कर देगी। जिससे अंदर का मल और दूषित वायु बाहर न आकर अंदर–ही–अंदर सड़ जाएगी, फलतः शरीर में दुर्गध आएगी एवं भयंकर रोग होंगे। इसलिए निरोग एवं स्वस्थ रहने के लिए दैनिक स्नान जरूरी है।

मुट्ठी में तकदीर

गतांक से आगे.....

ब्रह्माण्ड की समस्त शक्तियाँ, जो ओंकार हैं, साकार हैं, कभी निराकार हैं, सर्वत्र व्याप्त हैं। ऐसी शक्तियाँ जो हम सभी का सृजन करती हैं, जो इस सृष्टि की चालक हैं। उन समस्त शक्तियों को, जो विभिन्न धर्मों में, विभिन्न नामों से विदित हैं। ऐसे परम् पिता परमेश्वर के पावन स्वरूप को मैं बारम्बार नमन करता हूँ, प्रणाम करता हूँ और हम सभी के श्रद्धेय सत् गुरूदेव और माता–पिता के चरणों में भी वन्दन करता हूँ।

युगों–युगों से सृश्टि पर विभिन्न सन्तों के द्वारा, विभिन्न ऐसे व्यक्तियों के मुखारविन्द से, जिन्होंने धर्म की महिमा का गुणगान किया, कथाऐं हम समय–समय पर सुनते आ रहे हैं। ऐसी ही कथाओं को कर्म में परिवर्तित करती है आपकी अपनी नारायण सेवा संस्थान। जी हाँ, विगत 30 वर्षों से सम्पूर्ण विश्व में देह को देवालय मानकर साधना कर रही है यह संस्थान। विकलांग, निःशक्त, अनाथ, बेबस जनों की सेवा को सतत् समर्पित, ये आपकी अपनी संस्थान, आपके द्वारा दिये गये तन–मन–धन के पावन पुनीत सहयोग से। ऐसी संस्थान के द्वारा आयोजित, ये मानव धर्म की कथा, पहली बार जो कि एक नव–इतिहास के सृजन के साथ समर्पित है आपश्री की सेवा में। नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक, निर्वाणी पीठाधीश्वर, आचार्य महामण्डलेश्वर, कर्म योगी, संस्थान के जनक, संस्थान के पुरोधा जिन्होंने इस संस्थान को रचा, सोचा समझा और आप तक पहुंचाया, ऐसे व्यासपीठ पर बिराजमान पद्मश्री साधु कैलाशजी 'मानव' पूज्य गुरूदेव का हम तालियों के साथ स्वागत करते हैं, अभिनन्दन करते हैं, प्रणाम करते हैं और आपकी–अपनी नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक–संस्थापिका कमलादेवी जी, संस्थान अध्यक्ष श्री प्रशान्तजी, श्रीमती वन्दनाजी, श्री जगदीशजी आर्य, श्री देवेन्द्रजी चौबीसा और इस अंतर्राष्ट्रीय सेवा परिवार के समस्त सदस्यों की ओर से भारत वर्ष की पुण्य भूमि के सभी भाई–बहिनों का तथा भारत की सरहदों और सरहदों के बाहर बैठे हुए, कृष्ण प्रेमी, धर्म प्रेमी, कर्म प्रेमी अनुयायियों का हम अभिवादन एवं अभिनन्दन के साथ स्वागत करते हैं। हम शुभ की वेला में प्रवेश करें, शुभ कार्यों की ओर बढ़ें। मैं आपको बताता चलूं एक ऐसी कथा, जो हमें ना केवल जीवन जीने की प्रेरणा देती है, अपितु ये भी बताती है कि कैसे हम जिन्दगी को जीयें, कैसे अच्छे कर्म करें, कैसे सेवा, सत्य, त्याग, दया के मार्ग पर चलें, कैसे भगवान के बताये हुए कथनों का जीवन में अनुकरण करें। एक ऐसी कथा आपको सौंप रही है आपकी–अपनी संस्थान, उससे पूर्व आइये मैं प्रार्थना करता हूँ यहाँ बिराजमान हमारे दूर–दराज के राज्यों से प्रेमीजन पधारे हैं, उनमें से कुछ परम् आदरणीय भक्तजन पधारें, और दीप प्रज्ज्वलन के माध्यम से हम कथा में प्रवेश करें। साथ ही मैं प्रार्थना करता हूँ, भाई आनन्द जी पधारें, भाई रोहित जी पधारें, भाई नृसिंह जी पधारें, आईये दीप–प्रज्ज्वलन की ओर चलते हैं –

ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं।
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

नमो अरिहन्ताणम् नमो सिद्धाणम्।
नमो आयरियाणम् नमो उवज्झायाणम्।
नमो लोए सव्वसाहूणम्।
प्रभु की कृपा भयो सब काजु,
जन्म हमार सफल भयो आजु।
जा पर कृपा प्रभु की होए,
ता पर कृपा करे सब कोए।।
गुरूजी द्वारा मंत्र आरम्भ–
वक्रतुंड महाकाय, सूर्य कोटि समप्रभ।
निर्विध्नं कुरूमे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा।।
सर्वकार्येषु सर्वदा।।

क्रमशः.....

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सलाहकार प्रबन्धक–मोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एम.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com